समाजशास्त्र का अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंध **(Relation Of Sociology With Other Social Sciences)**

प्रत्येक सामाजिक विज्ञान समाज के एक विशिष्ट पहलू का अध्ययन करता है, संपूर्ण समाज का नहीं, लेकिन समाज को पूर्णता पृथक-पृथक भागों में नहीं बांटा जा सकता, उसे तो समग्रता या संपूर्णता में ही समझा जा सकता है और यह कार्य समाजशास्त्र करता है। इतना हमें अवश्य मानना पड़ेगा कि प्रत्येक सामाजिक विज्ञान समाज और मानवीय क्रियाओं का एक विशेष दृष्टिकोण से अध्ययन करता है, प्रत्येक का अपना एक विशिष्ट ध्यानबिंदु होता है। इस दृष्टि से प्रत्येक सामाजिक विज्ञान की अपनी-अपनी विशिष्ट विषय वस्तु या अध्ययन सामग्री है और प्रत्येक ने अपनी विशेष अध्ययन पद्धतियां भी विकसित की हैं । सामाजिक जीवन के विशेष पहलू का अध्ययन करने वाले प्रत्येक सामाजिक विज्ञान को विशेष सामाजिक विज्ञान और सामाजिक जीवन के सभी पहलुओं का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन करने वाले समाज विज्ञान (समाजशास्त्र) को सामान्य सामाजिक विज्ञान कहा गया है।

समाजशास्त्र और अन्य सामाजिक विज्ञानों के बीच पाए जाने वाले संबंध की विवेचना निम्नलिखित प्रकार से कर सकते हैं:-

समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र के अंतर्गत मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं या आर्थिक व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। अर्थशास्त्र को वस्तुएं एवं सेवाओं के उत्पादन एवं वितरण का अध्ययन भी कहा गया है। इस शास्त्र के द्वारा धन के उत्पादन एवं वितरण और उपभोग से संबंधित व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। धन से संबंधित मानवीय क्रियाओं या गतिविधियों को अर्थशास्त्र में प्रमुखता देने का कारण यह है कि धन आवश्यकताओं या इच्छाओं की पूर्ति का साधन है।

समाजशास्त्र के अंतर्गत मनुष्य की सामाजिक क्रियाओं या गतिविधियों का अध्ययन किया जाता है। यह शास्त्र प्रथा, परंपरा, रूढ़ि, संस्था, संस्कृति ,सामाजिक संबंधों के विभिन्न स्वरूपों, प्रक्रियाओं, सामाजिक प्रतिमानों, सामाजिक संरचनाओं तथा विभिन्न प्रकार के समूह में विशेष रूप से रुचि रखता है। समाजशास्त्र समग्र रूप में मानवीय व्यवहार एवं समाज को समझने का प्रयास करता है

समाजशास्त्र एवं राजनीति शास्त्र

समाजशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र के बीच घनिष्ठ संबंध है कुछ समय पूर्व तक राज्य और समाज में कोई भेद नहीं किया जाता था और इसी कारण समाजशास्त्र और राजनीति शास्त्र एक ही विषय के अंतर्गत आते थे। 18वीं एवं 19वीं शताब्दी में राज्य और समाज में अंतर किया जाने लगा तथा राज्य का अध्ययन राजनीति शास्त्र के द्वारा और समाज, परिवार, धर्म एवं कानून आदि का समाजशास्त्र के द्वारा अध्ययन किया जाने लगा।

राजनीति शास्त्र की रुचि प्रमुखत: सत्ता के अध्ययन में है। इस शास्त्र के द्वारा राज्य तथा राजकीय प्रशासन के अध्ययन पर विशेष जोर दिया जाता है। राजनीतिशास्त्र संगठित मानव संबंधों का अध्ययन करता है और ये संबंध सामाजिक संबंधों का ही एक अंग है। समाजशास्त्र और राजनीति शास्त्र में काफी आदान-प्रदान होता है। राजनीति शास्त्र मनुष्य को एक राजनीतिक प्राणी मानता है, परंतु वह राजनीतिक प्राणी क्यों और कैसे बना, यह जानकारी समाजशास्त्र ही प्रदान करता है। समाजशास्त्र तथा आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत के संबंध में सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि राजनीतिक सिद्धांत में पिछले 30 वर्षों में होने वाला अधिकांश परिवर्तन समाजशास्त्र द्वारा सुझाए गए और बताए गए मार्ग या ढंग के अनुसार हुए हैं।अब तो समाजशास्त्रीय सिद्धांतों एवं पद्धतियों का राजनीति शास्त्र में काफी प्रयोग होने लगा है। वास्तव में राजनीतिक व्यवहार को समझने के लिए, जैसे- मतदान-प्रतिमान या मतदान-०व्यवहार को जानने के लिए सामाजिक तथ्यों, विभिन्न सामाजिक संस्थाओं जैसे, जाति प्रणाली, संयुक्त परिवार प्रणाली, वर्ग-भेद, स्त्रियों की स्थिति, आदि के संबंध में जानकारी आवश्यक है। प्राथमिक आधार पर यह जानकारी हमें समाजशास्त्र से ही मिल सकती है। सामाजिक व्यवस्था और संगठन पर राज्य के कार्यों का काफी प्रभाव पड़ता है। राज्य के द्वारा पारित कानून प्रथाओं, रूढ़ियों, संस्थाओं और मूल्यों को काफी प्रभावित करते हैं। हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 तथा अनेक अन्य अधिनियमों ने सामाजिक जीवन और लोगों के व्यवहारों को अनेक रूपों में प्रभावित किया है।

समाजशास्त्र और इतिहास

समाजशास्त्र और इतिहास के बीच घनिष्ठ संबंध हैं। इन दोनों शास्त्रों की विषय वस्तु में खास अंतर नहीं होकर दृष्टिकोण में अंतर नहीं है। इतिहास भूतकाल की विशिष्ट घटनाओं का वर्णन करता है, उन घटनाओं के कार्य-कारण संबंधों की विवेचना करता है। भूतकाल के संबंध में ज्ञान के अभाव में न तो हम वर्तमान को भली-भांति समझ सकते हैं और न ही भविष्य को। इतिहास उस समय-क्रम का पता लगाने का प्रयत्न करता है जिसमें विभिन्न घटनाएं घटित हुई। इतिहास के द्वारा प्रारंभ से लेकर अभी तक के समय के मानव जीवन की प्रमुख घटनाओं का चित्रण किया जाता है। इस दृष्टि से इतिहास अतीत या भूतकाल की घटनाओं का क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित अध्ययन है। समाजशास्त्र अतीत की पृष्ठभूमि में वर्तमान समाज का अध्ययन है। यही कारण है की इतिहास अतीत का समाजशास्त्र और समाजशास्त्र समाज का वर्तमान इतिहास कहलाता था। किसी समय इतिहास राजा-महाराजाओं प्रमुख तारीखों व युद्धों की कहानी था, परंतु अब इसके द्वारा सामाजिक घटनाओं का आलोचनात्मक विवरण प्रस्तुत किया जाता है। यह सामाजिक घटनाएं समाजशास्त्र से संबंध हैं। इतिहास विभिन्न युगों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन का अध्ययन है। समाजशास्त्र ऐतिहासिक अध्ययनों से प्राप्त सामग्री के आधार पर वर्तमान युग के सामाजिक जीवन को समझने का प्रयास करता है।

समाजशास्त्र और मानवशास्त्र

सामाजिक मानव शास्त्र और समाजशास्त्र एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। संबंधों की इसी घनिष्ठता के कारण इसमें कोई स्पष्ट विशेष विभाजक रेखा खींचना संभव नहीं है। सामाजिक मानव शास्त्र को समाजशास्त्रीय अध्ययनों को एक शाखा माना जा सकता है।

वह शाखा जो प्रमुखता है अपने को आदम समाजों के अध्ययन में लगती है जब लोग समाजशास्त्र शब्द का प्रयोग करते हैं तो साधारणता उनके मस्तिष्क में सभी समाजों की विशिष्ट समस्याओं के अध्ययन होते हैं ग्रोवर ने समाजशास्त्र और मानव शास्त्र के बीच पाए जाने वाले घनिष्ठ संबंधों के आधार पर इन्हें जुड़वा बहने माना है दोनों ही विज्ञानों के द्वारा समझो का अध्ययन किया जाता है इतना अवश्य है कि सामाजिक मानव शास्त्र के द्वारा विशेषता आदम समझो का अध्ययन किया जाता है जबकि समाजशास्त्र के द्वारा आधुनिक जटिल शब्द समझो का सामाजिक मानव शास्त्र में समझो का उनकी संपूर्णता में अध्ययन किया जाता है सामाजिक मानव शास्त्र आदम लोगों की अर्थव्यवस्था का उनके परिवार और नातेदारी संगठनों का उनकी प्रौद्योगिकी तथा कलाओं का सामाजिक व्यवस्थाओं के भाग के रूप में अध्ययन करता है दूसरी ओर समाजशास्त्री प्रथक प्रथक समस्याओं का जैसे विवाह विच्छेद वेश्यावृत्ति अपराध श्रमिक असंतोष आदि का अध्ययन करता है। संस्कृति के विज्ञान के रूप में मानव शास्त्र समाजशास्त्र के काफी निकट है किसी भी समाज के संबंध में यथार्थ जानकारी प्राप्त करने के लिए उसे समाज की संस्कृति को समझना अत्यंत आवश्यक है और इसके लिए समाजशास्त्र को मानव शास्त्र से सहायता लेनी होगी साथ ही मानव शास्त्र की को संस्कृत की उत्पत्ति और विकास को जानने के लिए समाजशास्त्र द्वारा अध्ययन की जाने वाली सामाजिक अतः क्रियो एवं सामाजिक संबंधों की व्यवस्था से परिचित होना पड़ेगा संस्कृत के विकास में योग देने वाले कारकों की जानकारी समाजशास्त्री करता है समाजशास्त्र सामाजिक अतः क्रियो का अध्ययन करता है और इन अंतर क्रियो के परिणाम स्वरुप ही किसी समाज की संस्कृति की उत्पत्ति और विकास होता है स्पष्ट है कि दोनों विज्ञान एक दूसरे पर काफी निर्भर हैं

समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान

तमाशा प्रोमो मनोविज्ञान एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं सम सामाजिक मनोविज्ञान ने तो समाजशास्त्र और मनोविज्ञान को और भी निकट ला दिया है मनोविज्ञान को मस्तिष्क या मानसिक क्रियो का विज्ञान माना गया है जिस प्रकार समाजशास्त्र का केंद्रीय विषय समाज और सामाजिक व्यवस्था है उसी प्रकार मनोविज्ञान का केंद्रीय विषय व्यक्तित्व है मनोविज्ञान की रुचि व्यक्ति में है ना कि उसकी सामाजिक परिस्थितियों में यह शास्त्र मानसिक तत्वों जैसे ध्यान कल्पना स्नायु प्रणाली बुद्धि भावना स्मृति मस्तिष्क की स्वाभाविकता एवं विकृति आदि का अध्ययन करता है इस शास्त्र के द्वारा मनुष्य के मानसिक विचारों में अनुभवों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाता है मनोविज्ञान प्रमुखता व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है इसमें उन मानसिक प्रक्रियाओं जैसे संवेगों प्रेरकों चालको प्रत्यक्षबोध बोधीकरण सीखना आदि का अध्ययन किया जाता है जो व्यक्ति को एक निश्चित प्रकार से व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहित करती है व्यक्ति में यह मानसिक प्रक्रियाएं संगठित

रूप से एक निश्चित प्रतिमान का निर्माण करती हैं जिसे व्यक्तित्व कहते हैं व्यक्तित्व व्यवस्था का अध्ययन करना मनोविज्ञान का प्रमुख कार्य है
समाचार सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन है इनमें सामाजिक संबंधों सामाजिक प्रक्रियाओं समूह ऑन संस्थान प्रथाओं परंपराओं सामाजिक मूल्य सामाजिक संरचना सामाजिक परिवर्तन आदि का अध्ययन किया जाता है इन्हीं से मिलकर सामाजिक स्थिति बनती है समाजशास्त्र व्यक्ति के बजाय वस्तुतः इसी सामाजिक स्थिति का अध्ययन करता है
समाचार तथा दर्शनशास्त्र
समाजशास्त्र दर्शनशास्त्र एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं सेलर्स के अनुसार दर्शनशास्त्र एक व्यवस्थित विचार या चिंतन के माध्यम से संसार और स्वयं की प्रकृति के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त करने का निरंतर प्रयत्न है इस प्रकार दर्शनशास्त्र संसार और मनुष्य की प्रकृति को समझने का एक प्रश्न है और इस पर्यटन में समाजशास्त्र का उपयोग देता है दर्शनशास्त्र में तर्क एवं कल्पना का प्रमुख रूप से सहारा लिया जाता है तर्क एवं कल्पना के आधार पर ही जन्म तिथियां प्रथाओं रूढ़ियों व परंपराओं का विकास होता है और इन सब का अध्ययन समाजशास्त्र करता है दर्शनशास्त्र सामाजिक आदर्श मूल्य का अध्ययन करता है समाजशास्त्र का अध्ययन सामाजिक पृष्ठभूमि में करता है समाजशास्त्र सामाजिक आदर्श मूल्यों को ध्यान में रखकर ही समूह या समाज में व्यक्ति के व्यवहार का मूल्यांकन करता है समाजशास्त्र चाहता है कि सामाजिक आदर्श और मूल्य सामाजिक जीवन में प्रभावपूर्ण ढंग से लागू किया जा सके अर्थात व्यक्तियों का व्यवहार उनके अनुरूप हो सके यही यह दोनों विज्ञान एक दूसरे के निकट हैं समाजशास्त्री ज्ञान के विकास में दर्शनशास्त्र का प्रभाव सदैव बना रहेगा स्पष्ट है समाजशास्त्र दर्शनशास्त्र एक दूसरे के पूरक हैं और दोनों घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं